हिन्दी ही अभिमान है

मेरे वतन का मान है।
यह भारतीय की शान है।।
मेरे मुल्क का गुमान है।
इस देश की जुबान है।।
देशप्रेम का गान है।
हिन्द की पहचान है।।
युगों का गौरवगान है।
ये हिन्दी ही अभिमान है।।
प्रेमचन्द का प्राण है।
सुभद्रा का ये सम्मान है।
दिनकर का दिव्यज्ञान है।।
महादेवी की आन-बान है।
निराला भी सूर्यसमान है।।
हरिऔध का प्रज्ञान है।
सब हिन्दी के सुजान हैं।।
ये हिन्दी ही अभिमान है ।
भारत मां का यह मान है।।
देववाणी की सन्तान है।
देवनागरी जान है।।
हर भाषा का सम्मान है।
नवरत्नों की यह खान है।।

राष्ट्रभाषा का स्थान है।

वह राष्ट्र हिन्दुस्तान है।।

बिन हिन्दी हम निष्प्राण हैं।

जिस पर न्यौछावर जान है।।

वो हिन्दी ही अभिमान है।।

अभिव्यक्ति का प्रमाण है।

हिन्दी बड़ी महान है।।

माथे की बिन्दी समान है।

कृष्णभक्त रसखान है।।

गौरवान्वित विद्वान हैं।

लाभान्वित इन्सान है।।

हिन्दगगन की शान है।

ये हिन्दी ही अभिमान है।।

बाला नन्द झा 'सुशान्त'